पंचानन शिव प्रसंग

श्रीश्रीमाँ सर्वाणी

"ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत-गिरि-निभं चारुचंद्रावतंसं
रत्नाकल्पःज्ज्वलागं परशु-मृग-वराभीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्वरुपं निखिलभय-हरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।"

–अर्थात्, रजतगिरि के सदृश शुभ्रदेह, सुन्दर चन्द्रयुक्त किरीटधारी, रत्नभूषण से उज्ज्वलांग, दक्षिण ऊर्ध्वहस्त में परशु मुद्रा, वाम ऊर्ध्वहस्त में मृगमुद्रा, दक्षिण अधोहस्त में वरमुद्रा एवं वाम अधोहस्त में अभय मुद्राधारी प्रसन्न, श्वेत पद्मासीन, चतुर्दिशा में देवगण कतृक वंदित, ब्याघ्रचर्म परिहित, विश्व के आदिकारण विश्वरूप निखिल भयहर 'पंचवक्त्र' त्रिनेत्र महेश को नित्य ध्यान करिएगा।

सुधी साधकगण महेश का ध्यान इसप्रकार ही करते हैं। सगुण विराट् पुरुष से समुद्भूत पंचानन शिव अनिरुद्ध परमशिव रूप में विश्व के आदिकारण हैं एवं विश्वात्मारूप में विश्व का रूप हैं। पंचानन शिव के पंचमुख पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर व मध्य, इस रूप में पंचानन शिव पंचवक्त्र त्रिनेत्र समन्वित हैं। यही पंचानन शिव हुए 'परमशिव', जो परमब्रह्म स्वरूप पुरुषोत्तम अनिरुद्धरूपी 'परमशिव' हैं। शिव का ऊर्ध्वमुख (मध्य) हुआ मुक्तावर्ण, पीतवर्ण पूर्व मुख, पयोद (नील मेघ) वर्ण हुआ दक्षिण मुख, श्याम मेघवर्ण पश्चिम मुख एवं लोहित जवापुष्प सदृश वर्ण हुआ उत्तर मुख। इस पंचानन के मुखादि पार्श्व में भी चिन्तन किया जा सकता है। मूल विषय यह है कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर (सदाशिव), ईश्वर व रुद्र, ये पंचशक्ति समन्वित है पंचानन शिव। पंचानन के समष्टिभूत शक्ति के आसन पर परमशिव ने ध्यानस्थ होकर अपने नाभिकमल से देवी षोड़शी का सृजन किया। ये षोड़शी देवी हुई सृष्टितत्त्व के मध्य ऋषि शिल्प में तृतीय महाविद्या स्वरूपा 'श्री विद्या'।

जो नित्यानन्दमय देहधारी हैं, शक्ति के सहित जो अभिन्न हैं, जो चन्द्रकला रूप मुकुटधारी व वाक्य के अधीश्वर हैं एवं नादस्वरूप हैं, जो सर्वदा अ-कारादि पंचाशद् वर्ण के द्वारा अभिव्यक्त हैं, जो स्थावर-जंगमात्मक शब्द व अर्थरूप चराचर जगत् को क्रमानुसार व्याप्त करके विद्यमान रहते है, जिसको विश्वान्तर्गत व विश्वातीत चैतन्य स्वरूप शब्द ब्रह्म कहा गया है, वह ही हैं विशुद्ध कलात्मा शक्ति स्वरूप तेजोमय 'परमशिव'। विश्व व्यापी यह शब्दब्रह्म रूपी चैतन्य हमसब के देह में भी विराजमान है। यह शब्दब्रह्म रूपी अखंड चैतन्य जब देहाभ्यन्तरस्थ मूलाधार चक्र में कुंडली (कुंडलीभूत सर्पाकृति वायवीय ज्योति स्वरूपा शक्ति) सदृश नाड़ी द्वारा उपहित होती है तब वे 'कुंडलिनी' नाम से अभिहित होती हैं। यह कुंडलिनी मूलाधार-केन्द्रस्थ स्वयम्भू लिंगेश्वर शिव को वेष्टित करके अवस्थान करती हैं। देह-मध्य यह कुंडलिनी स्वरूप चैतन्य सर्वस्वरूप में प्रबुद्ध होकर समग्र देह में वायु द्वारा संचरित होते हुए कंठ, नासिका प्रभृति करण स्थान में उपस्थित होने से सत्ता शुद्ध वाङमय हो उठती है, जिसके फलस्वरूप मन के भाव समूहादि गद्य-पद्यादि वर्णरूप में आविर्भूत हो जाते हैं। इन परमशिव शम्भु से सर्वव्यापी, सर्वसाक्षी विश्व के सृष्टि-स्थिति-प्रलय, निग्रह व अनुग्रह रूप कार्य पंचक के कर्त्ता 'सदाशिव' आविर्भूत होते हैं। तत्पश्चात् सदाशिव से ईश्वर हुए, फिर इन्हीं से रुद्र का आविर्भाव हुआ; तत्पश्चात् विष्णु, इसके बाद ब्रह्मा आविर्भूत हुए।

–'सदाशिवाद् भवेदीशस्ततो रुद्र समुद्भवः।
ततो विष्णुस्ततो ब्रह्मा तेषामेवं समुद्भवः।।'

–इति शारदातिलक तन्त्रम्।

कलात्मा (शक्ति स्वरूप) बिन्दु रूप ही है परमशिव। परमब्रह्म के कला (बिन्दु) या शक्ति की एक-एक अवस्था ही एक-एक विग्रह का स्वरूप है। शक्ति की जिस अवस्था में सृष्ट्यादि कार्य पंचक रूप में आविर्भूत होते है, उसी

अवस्था विशेष में विशिष्ट शक्ति के सहित अभिन्न परमशिव ही सदाशिव हैं। अनुग्रह व निग्रह प्रधान शक्ति के सहित अभिन्न शिव ही हैं ईश्वर। इच्छाशक्ति प्रधान शक्ति के सहित अभिन्न शिव ही रुद्र हैं। क्रियाशक्ति प्रधान शक्ति के सहित अभिन्न शिव ही ब्रह्मा हैं। ज्ञानशक्ति प्रधान माया अथवा शक्ति के सहित अभिन्न शिव ही विष्णु हैं। तत्त्वगतरूप से यह शिव व शक्ति नाना नाम से अभिहित होती है। इसके बाद समग्र सृष्टि के मूल कारण सृष्टि में उन्मुख बिन्दुरूपी अव्यक्त परमशिव से ही सत्व, रजः, तमोगुण स्वरूप अन्तःकरणात्मक महत्तत्त्व की सूचना मिलती है।

शिव के पंचानन होने का एक पौराणिक उपाख्यान है – ''एकदा ब्रह्मा, विष्णु और शिव ब्राह्मण का वेश धारण कर गंगा के प्रवाह में स्नानांत आह्निक सन्ध्या कर रहे थे। उसी समय देवी पार्वती (दुर्गा) शव की तरह पानी में बहती-बहती जब ब्रह्मा के निकट पहुँची तो उन्होंने पार्वती को शव समझते हुए दूर हटा दिया। तब पार्वती देवी के पुनः बहते-बहते विष्णु के समीप जाने पर उन्होंने भी अशौच मानते हुए उन्हें दूर हटा दिया। अतः पार्वती देवी शव के सदृश बहती हुई शिव के निकट पहुँचकर जब उनसे टकराई तो शिव ने उनको अपने वक्ष से लगा लिया। पार्वती ने तब हँसकर प्रेम से कहा, 'ब्रह्मा और विष्णु ने जिसे मृत समझकर परिहार कर दिया था उसे ही तुमने चिन्मय समझकर पहचाना इसीलिए तुम 'मृत्युंजय' हो।''

ब्रह्मा के चतुरानन और विष्णु का एकानन मिलकर ही शिव 'पंचानन' हुए हैं। योगतत्त्व के दृष्टि-भंगि से ब्रह्मा हुए आत्मदृष्टा। इसीलिए वे सर्वत्र आत्मचैतन्य के प्रकाश को दर्शन करने में सक्षम हुए हैं। विष्णु आत्मा और प्राण को देखते हैं अर्थात्, विष्णु प्राण रूप में प्रवाहमान चिन्मयी आत्मा के सर्वव्यापकता की उपलब्धि करने में सक्षम हैं। शिव आत्मा, प्राण और देह को समन्वित रूप में देखते हैं; अर्थात्, शिव अवयव आत्मा के (पार्थिव स्थुलतनु पर्यन्त) सर्वभूतान्तर्गत वस्तु समूहादि को जीवन्त, प्राणवंत और चिन्मयी देखते हैं। अर्थात् इस विश्व में जड़ और चेतन रूप में जो चैतन्य विराजित है, शिवब्रह्म वही बोध करते हैं।

-हिन्दी अनुवाद

मातृचरणाश्रिता श्रीमती ज्योति पारेख